परम तपस्वी
श्री रामसिंह जी

विपश्यना विशोधन विन्यास

परम तपस्वी

श्री रामसिंह जी

(१९ सितम्बर, १९१८ - १८ दिसम्बर, २०१०)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

परम तपस्वी श्री रामसिंह जी

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [V]

जीवन परिचय १

प्रारंभिक जीवन १

प्रशासनिक जीवन १

विपश्यना से परिचय. २

इसके प्रचार-प्रसार का कार्य २

अंतिम समय ३

मृत्यु संस्कार पर अभिप्राय - (Will) ५

सद्‌गति का लक्षण ८

कृतज्ञता सम्मेलन १०

पूज्य गुरुजी की कृतज्ञता. १०

विपश्यना के प्रथम जेल शिविर के संस्मरण.....१२

धर्मपुरुष के संस्मरण १६

(परिचितों द्वारा) १६

(परिवारजन द्वारा) ५९

जज्वात (स्वयं के).....६८

श्री रामसिंह जी की लेखनी से.....७१

'मग्ग' (मार्ग) ७१

शासनतंत्र में विपश्यना ७७

जेलों में विपश्यना : एक ऐतिहासिक पुनरवलोकन ८३

बैराठ (विराटनगर) ९८
विपश्यना केंद्र, धम्मथली १११
परिदृश्य (१), १९८३ . . . . . १११
परिदृश्य (२) २०११ - तब और अब . . . ११५
विपश्यना विशोधन विन्यास की जयपुर शाखा.....११९
संक्षिप्त परिचय ११९
दस-दिवसीय विपश्यना शिविर : शिविरपूर्व वार्त्ता १२६
मन को निर्मल करने की कला है विपश्यना! १३०
वेबसाईट (Website) १३६
विपश्यना साहित्य १३७
विपश्यना साधना के केंद्र १३९

जीवन परिचय

प्रारंभिक जीवन

श्री रामसिंह जी का जन्म ग्राम सलाड़िया (जिला बांसवाड़ा, राजस्थान) में दिनांक ११.९.१९१८ को हुआ। ६ माह की उम्र में आपके पिता जी का देहांत होने पर माताजी आपको अपने पीहर खांदू ग्राम ले गयीं जहां इन्होंने कक्षा तीन तक शिक्षा ली। १५ वर्ष की आयु तक आप बांसवाड़ा रहे। यह समय अत्यंत कठिनाईयों भरा था। छात्रों की ट्यूशन लेकर अपना अध्ययन जारी रखा। फाइनल परीक्षा में ९८% अंकों से उत्तीर्ण हुए। बांसवाड़ा रियासत ने तब रु. ८ प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्रदान की। उच्च शिक्षा हेतु आप इंदौर गये। हाई स्कूल परीक्षा में मेरिट सूची में सातवां स्थान रहा। इस उपलब्धि पर उन्हें रियासत द्वारा रु. ४० प्रतिमाह छात्रवृत्ति स्वीकृत की गयी। इंदौर में होलकर कॉलेज से एम.ए. (अर्थशास्त्र) एवं एल.एल. बी. की।

प्रशासनिक जीवन

अध्ययन पूरा कर आपने बांसवाड़ा रियासत में तहसीलदार, सहायक राजस्व कमिश्नर, सहायक राजस्व सचिव, मुख्य सचिव आदि पदों पर काम किया। १९४८ में रियासतों का बृहद राजस्थान में विलय होने पर उदयपुर में सहायक सचिव बने। १९५३ में भारतीय प्रशासनिक सेवा (I.A.S.) में चयन हुआ और डूंगरपुर में विकास अधिकारी एवं एस. डी. ओ. रहे। १९५८ में चूरू कलक्टर और १९६० में जयपुर कलक्टर रहे। जयपुर में १९६८ तक विकास विभाग में विभिन्न पदों पर व विशिष्ट शासन सचिव रहे। १९६८ से १९७१ तक प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (Harish Chandra Mathur - Rajasthan State Institute of Public Administration) में निदेशक रहे। इस कार्यकाल में IAS अधिकारियों का प्रशिक्षण भी इसी संस्थान से प्रारंभ हुआ और फोर्ड फाउंडेशन के माध्यम से अधिकारियों को प्रशिक्षण हेतु विदेश भेजने का क्रम प्रारंभ हुआ। आपने भी यूरोप, अमरीका, जापान आदि १४ देशों का भ्रमण किया और प्रशिक्षण को प्रभावी व व्यावहारिक बनाने के लिए कई प्रयास किये। १९७२ में शिक्षा